जोसफ मोर की जीवन कहानी और विश्व प्रसिद्ध क्रिसमस कैरोल
"खामोश रात! पवित्र रात!"
की उत्पत्ति की कहानी

हनो शिलफ

अनुवाद — अलका कौशिक

© कॉपीराइट 1996-2017 और सभी मीडीया पे अधिकार हन्नो शिल्फ, व्रंगेल स्ट्रस्से 93 बर्लिन, 10 99 7, के द्वारा आरक्षित।

खामोश रात संग्रहालय, स्टाइनगास्से 9, साल्ज़बर्ग

पुनर्निर्मित जन्मस्थान, साइलेंट नाइट संग्रहालय, साल्ज़बर्ग

हम 1792 के साल्ज़बर्ग की ओर लौट गए हैं। साल्ज़बर्ग नदी के पास एक पगडंडी गुजरती है जहां जोसफ मोर की मां आन्ना शोएबर स्टिनगासे नंबर 9 में रहा करती थी। वह इस क्वार्टर में अपनी मां मारिया, दो बेटियों —जोसफ की सौतेली बहनें— और सर्दियों में अपनी भतीजी थेरेसा के पास रहती थीं। इन पांचों को एक कमरे में गुजर करनी पड़ती थी। हीटिंग का कोई इंतजाम नहीं था और मकान मालिक ने छोटी-सी रसोई के इस्तेमाल के लिए सख्त हिदायतें जारी की हुई थीं। आन्ना पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े रसोई में गर्म कर कढ़ाई में रखकर कमरे में ले जाती ताकि कुछ तो गर्माइश पैदा हो। घर का गुजारा कताई-बुनाई से चलता था पर किसी किले के सिपाही को साथ में रखने के लिए यह नाकाफी था। वह मारियाफर गांव का 28 साल का फ्रांज़ जोसफ मोर था। तीन पीढ़ियों तक मृत्यु कर्ज अदा करने के कारण उसका परिवार कंगाल हो गया था और उसे अपनी पारिवारिक जायदाद 500 फ्लोरिन में नीलाम करनी पड़ी थी। इसी वजह से मोर ने छह साल तक सेना की नौकरी में खुद को बांध लिया था। सैनिकों को अच्छी पगार मिलती थी और नाइट ड्यूटी करके वे थोड़ी और आमदनी भी कर सकते थे। शहर के एक गेट पर पहरेदारी करने के बाद वह सुबह को लौटता और शोएबर के दो बिस्तरों में एक पर सो जाता। सर्दियों में उसे गर्म बिस्तर मिलता था जिसके लिए परिवार के किसी सदस्य को उसके आने तक चादर में बैठना पड़ता था। चलो मान लेते हैं कि एक रोज मार्च की सुबह आन्ना शोएबर देर तक सोई रह गई और फौजी बिस्तर में वक्त से पहले घुस गया। कुछ भी कह लो, नौ महीने बाद 11 दिसंबर, 1792 को जोसफ मोर का जन्म हुआ।

आन्ना मां बनने वाली है, यह सुनते ही फौजी मोर भाग खड़ा हुआ। वह सेना से भी भाग गया। उन्नीस साल बाद 1811 में जब वह फिर प्रकट हुआ तो उसे बिना दंड दिए ही फौज में फिर से ले लिया गया और क्लोसनटोर में पहरेदार बन गया। लेकिन छह साल की पुरानी नौकरी पूरी होने के कुछ ही दिन बाद वह 1814 में चल बसा। जोसफ की मां को तुरंत सजा दी गई। दो जायज औलाद को वह पहले ही जन्म दे चुकी थी और तीसरे "यौन गुनाह" के लिए उसे नौ फ्लोरिन का जुर्माना सुनाया गया। यह आन्ना शोएबर के पूरे साल की कमाई के बराबर था। लेकिन अगर जुर्माना नहीं भरती तो उसे किसी वर्कहाउस में काम पर भेज दिया जाता।

स्टाइनटोर, साल्ज़बर्ग के द्वारपाल

इस बेहद पेचीदा स्थिति से निकलने का रास्ता शहर के जल्लाद की ओर से आया। फ्रांज़ जोसफ वॉल्मठ 80 लोगों का सर कलम कर चुका था और 200 लोगों को उसने यातनाएं दी थीं। वह बेहद विद्रूप और डरावना था। कोई उसकी आंख में नहीं देख पाता था, उसे छूने की बात तो बहुत दूर की थी। लेकिन था वह धनी और उसने आन्ना के बच्चे का पिता बनने के लिए उसका जुर्माना भरने की पेशकश की। इस भलमनसाहत के बल पर उसे लगता था समाज में उसका कुछ तो आदर कायम हो जाएगा। उसने कैथेड्रल में एक बड़ा आयोजन किया जिसमें वह खुद नहीं आया। उसने अपने खानसामे फ्रांजिका जाचिम को भेजा ताकि उसे परंपरागत रूप से बच्चे को गिरजे के पवित्र जल से उठाने की इजा ज़ त नहीं मिलने की जिल्लत से बच सके।

जल्लाद, फ्रांज जोसेफ वोहलमुथ

जोसफ के लिए सामाजिक जिंदगी लुढ़कती हुई शुरूआत थी। वह न सिर्फ नाजायज़ औलाद था बल्कि अब तो एक जल्लाद का गोद लिया हुआ बेटा था। उसके स्कूल जाने पर पाबंदी थी, कोई कारोबार सीख नहीं सकता था और काम करने का हक भी नहीं था। वह नदी किनारे खेलता रहता और वहां से गुजरते मल्लाहों और उनकी नौकाओं को देखता रहता। हॉलीन की खदानों से नमक साल्ज़बर्ग नदी के रास्ते उन्तरलोफन भेजा जाता था जिसका नाम बाद में ओबर्नडार्फ पड़ा। वहां से माल बड़ी नौकाओं में लादा जाता और विएना एवं बुडापेस्ट में इन्न और दानुबे के लिए भेजा जाता। कभी-कभार जोसफ नौका पर लद जाता और साल्ज़बर्ग से कुछ मील दूर तक सवारी गांठने के बाद लौट आता। बचपन के इस खिलवाड़ का खमियाजा उसे बाद में भुगतना पड़ा।

उसके लिए खेल का दूसरा मैदान हुआ करती थीं वे सर्पीली सीढ़ियां जो 9 स्टीनगासे से शुरू होतीं और पहाड़ की चोटी पर बनी कैपुचिन मोनेस्ट्री तक जाती थीं।

कपुज़ीनेरबेर्ग, साल्ज़बर्ग

साल्ज़बर्ग के लिए लोगों के लिए रविवार एक खुशनुमा शगल था और छुट्टी वे इस ढंग से बिताया करते थे: लिंजरगासे से चलना शुरू करते और स्टेशनों को पार करते हुए कैपुजिंबर्ग के शीर्ष तक जाया करते थे। यहां से शहर का मनोरम नज़ारा चमकता था और किले के पीछे पहाड़ झांका करते थे। स्टिनगासे से इम्बरस्टीग तक जोसफ को सजे-धजे कपड़ों में गुजरते लोग मिला करते थे।

सेंट पीटर की बेनिडिक्टिन आब्बी और कॉलेजिएट, साल्ज़बर्ग

सॉल्ज़बर्ग के आर्चबिशोप, हीएरोनयमुस वॉन कोल्लोरेडो

एक रोज मॉन्क जोहान नेपोमुक हीर्नले ने सीढ़ियों से उतरते हुए जोसफ को गाते हुए सुना। बच्चे की आवाज से वह इतना प्रभावित हुए कि वह उसकी मां को खोजते हुए पहुंच गए और इस संगीत प्रतिभा को तुरंत मांजना जरूरी है अन्यथा यह बर्बाद चली जाएगी। वह बच्चे की दर्दनाक कहानी से बेहद भावुक हो गए और उन्होंने उसका दाखिला सेंट पीटर स्टिफ्ट स्कूल में करा दिया जो बड़े लोगों के बच्चों के लिए हुआ करता था। स्कूल के दस्तवेजों से पता चलता है कि वह कक्षा के 24 बच्चों में से हमेशा पहले छह बच्चों में शुमार था। वह सेंट पीटर चर्च की प्रार्थना गाया करता था और 12 साल की उम्र तक पहुंचने तक वह गिटार, आर्गन और वॉयलिन बजाने में माहिर हो चुका था। दिलचस्प बात यह है कि प्रार्थना में अक्सर देर से पहुंचने के लिए उसे डांट पड़ती थी। "शायद वह कॉलिजिएट चर्च में जर्मन संगीत के अभ्यास में मशगूल हो जाता था।" यह एकमात्र चर्च था जहां प्रार्थना जर्मन में हुआ करती थी, लैटिन में नहीं जो 97 प्रतिशत आबादी को समझ में आती थी।

उस समय साल्ज़बर्ग के आर्चबिशप हिरोनिमस कोलोरेडो हुआ करते थे। हालाकि उन्हें मोज़ार्ट के साथ सख्ती से पेश आने के लिए याद किया जाता है लेकिन वह कई मायने में उदार थे और 1787 के बाद से ही वह प्रार्थनाओं में जर्मन भाषा के पैरोकार थे। लेकिन अधिकतर पुरोहितों ने उनका पुरजोर विरोध किया। उनका आरोप था कि उनकी प्रोटेस्टेंट से मिली-भगत है।

आर्चबिशप ने इसके बदले में कॉलिजिएट चर्च की प्रार्थनाओं में जर्मन लागू कर दी और यह हुक्मनामा जारी किया कि संगीत प्रतिभा के धनी युवा किसी भी सामाजिक तबके से हों, वे विश्वविद्यालय और प्रीस्ट सेमिनेरी में जा सकते हैं। इस तरह जोसफ को भी विश्वविद्लय जाने का मौका मिल गया जो उसे पहले उपलब्ध नहीं था।

लेकिन 1808 में बावरियनों ने हमला किया और जोसफ को साल्जबर्ग छोड़ना पड़ा। उसने दर्शन, धर्मशास्त्र में अपना अध्ययन क्रेम्समुन्सटर के बेनेडिक्टाइन विश्वविद्यालय में जारी रखा। वह 1811 में साल्ज़बर्ग लौट आया और प्रीस्ट सेमेनेरी में दाखिल हो गया। उसे साल्ज़बर्ग कैथेड्रल में 1815 में प्रीस्ट की उपाधि मिल गई।

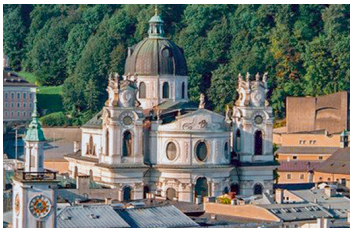

कोलीजिट चर्च, साल्ज़बर्ग

लेकिन 1808 में बावरियनों ने हमला किया और जोसफ को साल्ज़बर्ग छोड़ना पड़ा। उसने दर्शन, धर्मशास्त्र में अपना अध्ययन क्रेम्समुन्सटर के बेनेडिक्टाइन विश्वविद्यालय में जारी रखा। वह 1811 में साल्ज़बर्ग लौट आया और प्रीस्ट सेमेनेरी में दाखिल हो गया। उसे साल्ज़बर्ग कैथेड्रल में 1815 में प्रीस्ट की उपाधि मिल गई। इसका समारोह मनाने के लिए जोसफ बेर्खत्सगादेन गया। घर के रास्ते में उसे रामासौ कस्बा मिला। वहां के लोकल प्रीस्ट सेवेरिन वॉलनेर थे और संयोग से उसी दिन उनका सहायक प्रीस्ट भाग गया था। वॉलनेर को जोसफ अचानक भा गया और उन्होंने उसे अपना सहायक बना लिया। लेकिन अक्टूबर में वॉलनेर के जोसफ को रामासौ में रखने के आग्रह के बावजूद आर्चबिशप ने उसे मारियापफार भेजने का आदेश दिया। मारियापफार साल्ज़बर्ग से 80 मील दक्षिण में 1200 मीटर के पठार पर था जिसे लुगो कहा जाता था। जोसफ के लिए यह रास्ता आसान नहीं था। वह उस गांव में रहने जा रहा था जो उसके फौजी पिता का था जिनसे वह कभी नहीं मिला था। तीन दिन बाद वह रादस्ताद पहुंचा जहां से उसे 2000 मीटर ऊंचे तौरेन दर्रे के लिए रोमन मार्ग पकड़ना था। जोसफ यात्रियों के उस आखिरी काफिले में शामिल होने में कामयाब हो गया जो दर्रा पार करने के लिए जमा हुए थे। जब वे दर्रे तक पहुंचे तो वह काफी गहराई तक बर्फ में समा चुका था और घोड़ा-बुग्गियों के हुजूम के आगे चल रहा पचास बैलों का रथ बमुश्किल बढ़ पा रहा था। यह साल का आखिरी काफिला था। इसके बाद अप्रैल के मध्य तक लुंगो बाकी दुनिया से कट जाने वाला था।

जब वह मारियापफार पहुंचा तो उसे फादर जोसफ स्टोफ मिले जा उसे एक महात्मा के पास ले गए। जोसफ के अलावा दो और सहायक पादरी वहां थे। कुछेक दिन बाद, स्टोफ उसे अपने दादा से मिलाने ले गए जो मारियापफार से दो मील दूर एक फार्म पर काम करते थे। वह दो बाथहाउस के मालिक भी थे और उन्हें बहुत बड़ा हकीम माना जाता था। हकीम बहुत कम हुआ करते थे क्योंकि उन दिनों दवाओं का मामला मिडवाइफों या महिला हकीमों का दायरा माना जाता था। उस समय लुंगो में मारियापफार की तरफ 7000 लोग रहते थे और उन पर सिर्फ एक हकीम था। दादा मोर 86 साल के थे और उस समय इस उम्र तक पहुंच पान बूटियों, टिंक्चरों वगैरह के असरदार होने का सबूत था।

दादा का घर, मारियापफार

जोसफ को पारंपरिक प्रशिक्षण मिला था और अब उसके दादा ने उसे लुंगों की परंपराओं से परिचित कराया। ये ईसाइयत से पूर्व की थीं लेकिन यह इलाका ईसाइयत की जीवन पद्धति में शांति से घुलमिल गया था। लुंगो महीनों तक बाकी दुनिया से कटा रहने के कारण अपनी परंपराओं को बचाए रखने में कामयाब रहा था। दूसरी वजह यह थी कि मारियापफार के पादरी इसी इलाके के थे इन्हीं रीति रिवाजों में पले-बढ़े थे। जब वे पादरी बनकर यहां लौटे तो उसका रवैया ईसाइयत पूर्व के रिवाजों के लिए सहिष्णु था। यहां के मूर्तिपूजक पर्वों को भुलाने के बजाए उन्होंने ईश्वर के नाम पर लोगों को उन्हें चर्च में मनाने के लिए प्रेरित किया।

"सैमसन" का जलूस, मारियापफार

इस सुखद समझौते का अंत वर्ष 1600 के आसपास हुआ जब एक पादरी यहां आया जो मारियापफार का नहीं था। उसने इन लोगों की आदतों को काफिराना माना और तमाम तरह की पाबंदियां लगानी शुरू कर दीं। जब उसकी मांगों की अनदेखी की गई तो उसने नाफरमानी करने वालों पर जज़िया लगाने की धमकी थी। एक साल बाद 3500 में से 2800 मारियापफार वासी प्रोटेस्टेंट हो गए! जब साल्ज़बर्ग में चर्च के मुखियाओं को इस बात का अहसास हुआ कि उन्होंने इस शख्स को यहां भेजकर क्या तबाही की है तो उन्होंने नया पादरी नियुक्त किया - इस बार वह इसी इलाके का था।

परंपरागत जीवन फिर से बेखौफ हो गया और दो साल बाद 50 को छोड़ बाकी परिवार कैथोलिक खेमे में लौट आए। प्रोटेस्टेंट के जमाने में गांववासियों को चर्च में जाने की मनाही हो गई थी पर इसके बावजूद वे हर रविवार को बड़े फार्महाउसों या अस्तबलों में जमा होते और बाइबिल पढ़ा करते थे। उन्होंने ईस्टर, व्हाइटसन या क्रिसमस मनाना जारी रखा और जब उन्हें लैटिन नहीं समझ आती थी तो वे संशोधित वायलिन गिटार के बजाए जर्मन गीतों से काम चला लेते थे। जब उन्हें वापस चर्चों में आने की अनुमति मिल गई तो वे अपने वाद्य और जर्मन संगीत भी अपने साथ ले आए।

जब जोसफ मारियापफार आया तो उत्सव इसी अंदाज में दो साल तक मनाए जाते रहे। लेकिन जोसफ को इसका कभी अनुभव नहीं हुआ। हम कल्पना कर सकते हैं कि सैक्रिस्टी में कोई युवा पादरी कैसे क्रिसमस की तैयारी करता होगा। अचानक उसने सुना कि चर्च में आर्गन के बजाए बांसुरी और वायलिन बजने लगी। और पादरी ने जर्मन गीत ही नहीं गाए बल्कि जर्मन प्रवचन भी लैटिन में शामिल कर लिए। प्रार्थना ने जोसफ पर गहरा असर छोड़ा और उससे प्रेरित होकर उसेन अपनी "वेनाख्तस्लीड" लिखी जिसे उसने "खामोश रात, पवित्र रात" नाम से अगले साल, 1816 में प्रकाशित किया।

जोसफ मोर का गिटार

नए साल के शुरू में बूढ़े मोर ने दम तोड़ दिया। जोसफ ने उन्हें खुद दफनाया। वह अपने दादा को सिर्फ चार महीने से ही जानता था। इसके तुरंत बाद राजनीतिक परिवर्तनों के कारण गांव में उथलपुथल मच गई। इस समय साल्ज़बर्ग ऐसा आखिरी मध्य यूरोपीय क्षेत्र था जो अब भी नेपोलियन जंग की चपेट में नहीं आया था। अप्रैल 1816 में म्युनिख में शांति समझौते पर हस्ताक्षर हुए जिसके तहत बावरियों ने एक माह के भीतर साल्ज़बर्ग छोड़ने की बात कबूल कर ली। हमलावर सेना लूटपाट, चोरी डकैती करते हुए लौट गई। मारियापफार का एक खजाना लुट गया। वह था ग्रिलिंगर बाइबिल।

ग्रीलिंगेर बाइबल

चांदी के छोटे अल्तार और सुदंर से चैलिस के साथ यह बाइबिल फादर ग्रिलिंगर ने 1420 के आसपास दान की थी जिससे यह स्थान तीर्थ बन गया था। इसके बावजूद लोगों में मुक्ति का उल्लास था। जोसफ पर इसका प्रभाव पड़ा। कैरोल के चौथे और पांचवे श्लोक में वह स्थानीयता से हटते हुए जीसस से सीधे संवाद करता है और उसमें सभी लोगों को क्षमा करने की कामना है। उसके शब्दों में मुक्ति का बोध है। पतझड़ के आखिर में उल्लास भूख में बदल गया और गांववालों की कठिनाइयों का जोसफ पर असर होता दिखायी दिया। एक अल्पाइन फार्म से दूसरे तक जाने में उसके फेफड़े जवाब देने लगते थे जो स्टिनगासे के ठंडे नम कमरे में रहने के कारण पहले ही कमजोर थे। परिवार के दूसरे सदस्यों की तरह ही उसे भी टीबी हो गई। जब अगली जुलाई तक जोसफ की हालत नहीं सुधरी तो स्टोफ उसे साल्ज़बर्ग ले गए जहां वह छह हफ्तों तक अस्पताल में रहा। इस बीच, स्टोफ ने जोसफ का तबादला आबर्नडार्फ करा लिया जहां का मौसम उसके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल था।

आबर्नडार्फ के पादरी जोसफ कैसलेर थे। वह मारियापफार से आए थे और स्टोफ के करीबी थे। लिहाजा जब जोसफ ने मारियापफार की प्रार्थनाएं आबर्नडार्फ में शामिल करनी चाही तो पादरी ने उसका स्वागत किया। उसे शिक्षक और आर्गेनिस्ट फ्रांज़ एक्स ग्रूबर का भी समर्थन मिल गया। उन्होंने जर्मन-लैटिन मिश्रण में प्रार्थनाएं और जर्मन प्रवचन लिखे। यह खबर तेजी से फैल गई। आसपास के गांव वाले वहां उमड़ना शुरू हो गये। पहली बार उन्हें वह बात समझ आ रही थी जो चर्च में प्रवचन के तौर पर कही जा रही थी।
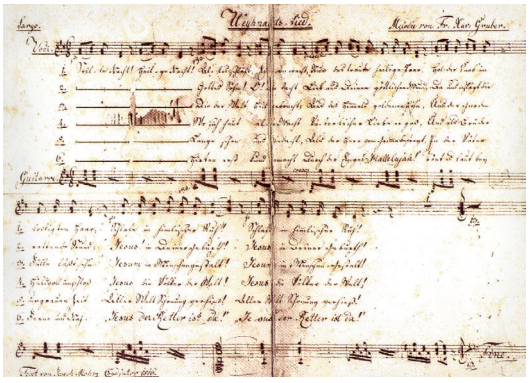
साइलेंट नाइट पांडुलिपि, शीर्षक वाइनाक्सलीद 1816

लेकिन सुधार का यह दौर तीन महीने ही चल पाया। साल्ज़बर्ग के कनस्टिरी ने दखल दिया और कैसलेर को हटा उनके स्थान पर बूढ़े फादर जार्ज हीनरिख नोस्टलर को नियुक्त कर दिया जो घोर परंपरावादी थे। उन्होंने जर्मन को चर्च में प्रतिबंधित कर दिया। उनके विचार से जर्मन का चर्च में कोई स्थान नहीं था और लैटिन ही धार्मिक संदेश ले जा सकती थी।

जोसफ ने इसका यह कहते हुए प्रतिवाद किया कि जीसस ने अपना उपदेश लैटिन में नहीं बल्कि आर्माइक में दिया था और किसी परायी भाषा के प्रवचनों से लोगों को प्रभावित नहीं किया जा सकता। नोस्टलर ने इसे नाफरमानी के तौर पर देखा और उसे उसके अतीत के विद्रूप की याद दिलाकर खामोश करने की कोशिश की। उनका कहना था कि ऐसी नाजायज औलाद को चर्च का शुक्रगुजार होना चाहिए जहां से उसे सब कुछ मिला और जर्मन जैसी वाहियात बात को प्रार्थनाओं में नहीं लाना चाहिए।

साल्ज़बर्ग के पास ओबरडॉर्फ़

जब जोसफ बदलने का तैयार नहीं हुए तो दो पीढ़ियों के पादरी उसके खिलाफ हो गए और महीनों तक यह फसाद चलता रहा। नोस्टलर को एक युवा पादरी का पादरी की भूमिका को परिभाषित करना बर्दाश्त नहीं हुआ। जोसफ के लिए जीसस का अनुयायी बनाना अहम था जो सबके लिए खुला हो और सबके लिए उपलब्ध हो। उनके लिए थी जो चर्च न आते हों। इसमें अचरज नहीं कि जोसफ दो प्रीस्ट से कहीं ज्यादा जोसफ की लोकप्रियता बढ़ गई। आखिरकार नोस्टलर ने कनस्टिरी में गुहार लगाई और जोसफ पर अनुशासनहीनता और बचपना करने का आरोप लगाया। उसने इस तरह की मिसालें दीं:

"जोसफ सालज़ाक की तरह नौकाओं पर सवार होता है। गिटार पर बेढंगे गीत आम जनता के बीच गाता है। सड़कों पर औरतों के साथ मजाक करता है। सबसे खराब बात तो यह है कि वह पाइप लेकर बेहद गंवार ढंग से चलता है। उसकी बैल्ट में तंबाकू की पुड़िया लटकी होती है। ये सब आदतें चर्च के खिलाफ हैं और समुदाय को एक गंभीर सहायक पादरी की जरूरत है।"

सालज़ाक नदी पे नौकाएँ

जब कनस्टिरी ने नोस्टलर के सुपरियर सेंट जार्जन के डीन से इस पर राय मांगी तो उन्होंने एक अप्रत्याशित उत्तर मिला। मसलन, नोस्टलर के पत्र में एक युवा की बढ़ती लोकप्रियता से जलन की गंध आती है।
इसके अलावा, जोसफ बेहद लोकप्रिय प्रीस्ट है जिसने आबर्नडार्फ के चर्च में सुधारों और आसपास के समुदाय के साथ जुड़ा के बल पर एक रुतबा कायम कर लिया है। उसके प्रवचनों के दौरान लोगों की उपस्थिति सामान्य से कहीं ज्यादा होती है और उसे एक अच्छा प्रवचक माना जाता है।

नोस्टलर इससे फुंक गया और अपने प्रतिद्वंद्वी से पीछा छुड़ाने के लिए वह किसी भी हद तक जाने के लिए तत्पर हो गया। उसने अफवाहें फैलाकर जोसफ की इज्जत पर बट्टा लगाने का निश्चय किया। उसने जोसफ के नाजायज़ औलाद होने और एक जल्लाद द्वारा गोद लिए जाने को निहायत घटिया रोशनी में पेश करना शुरू किया। वह कामयाब भी होने लगा और लोगों ने जोसफ से दूरी बनानी शुरू कर दी। यहां तक कि ग्रूबर भी, जो जोसफ का सबसे करीबी हुआ करता था, उससे कटने लगा क्यों कि उसे अपना भविष्य चौपट होता दिख रहा था। लेकिन उसने अपनी दोस्ती दूसरे अंदाज में दिखाई:

रॅन्ज़ जावेर ग्रूबर

1818 में क्रिसमस से एक रात पहले उसने चर्च का आर्गन तोड़ दिया और इल्जाम इस बात पर रखा कि चूहों ने उसे काट दिया था ताकि जोसफ को नोस्टलर का मन जीतने का मौका मिल जाए। आर्गन के बिना प्रार्थना नहीं हो सकती थी। ग्रूबर और मोर अब एक विकल्प सुझाकर नोस्टलर को संगीत उपलब्ध कराने की स्थिति में थे। उन्होंने मारियापफार की तर्ज पर समारोह आयोजित किया और अंत में जोसफ का लिखा हुआ क्रिसमस कैरोल प्रदर्शित किया जो उसने पहाड़ों में लिखा था और ग्रूबर ने उसमें दूसरी भूमिका अदा की थी। समारोह सफल रहा और लोग जोसफ के गीत के कायल हो गए। यहां तक कि नोस्टलर का दिल भी पसीज गया और बाकी दो प्रीस्ट भी शांत पड़ गए।

लेकिन अगले साल जुलाई में तर्क-वितर्क फिर छिड़ गए। जोसफ ने कनस्टिरी में तबादले के लिए आवेदन कर दिया। अक्टूबर 1819 में कुच्ल के लिए आबर्नडार्फ चला गया।

यह गांव एल्प्स की तराई में बसा है और अपने मनोरम चर्च एवं पांचवी सदी में सेंट सेवेरिन के चमत्कार के लिए विख्यात है। उस दिन समुदाय के हर सदस्य को एक मोमबत्ती दी गई थी और जिनकी आस्था एवं दिल पवित्र था उन सबकी मोमबत्तियां प्रज्ज्वलित हो गई थीं, बाकी की नहीं। यह स्थान अपनी उच्च चमत्कारिक ऊर्जा के लिए जाना जाता है और जोसफ को भी इससे ताकत मिली। इसके बाद जोसफ के लिए कई वर्षों का सफर मिला। बाद के नौ साल में वह ग्यारह स्थानों—गोलिंग, विगौन, हैलिन, क्रिसपल, एडनेट, एंथेरिंग, कोप्पल, फिर से एंथेरिंग, यूजेनडार्फ और हॉफ गया।

ओबेन्दॉर्फ मे ऑर्गन

1827 में उसकी मां का साल्ज़बर्ग में देहांत हो गया। वह गाहे-बगाहे मां को अपने साथ ले जाता लेकिन जब वह ठीक हो जाती तो वापस चली जाती थी। अपने आखिरी वर्षों में वह अपने पूर्व नियोक्ता लौबाचेर परिवार के साथ रहीं जिनके लिए वह बुनाई किया करती थी। छह महीने बाद जोसफ को हिंटेरसी में जिम्मेदारी दी गई जो कुछ ही खेतों वाला सुखद-सा गांव था।

जोसेफ मोर की कबार

जोसफ का आखिरी बाद तबादला 1837 में हुआ। उसे पोंगौ के वार्गिन भेजा गया। वह कतई खुश नहीं था। उसकी शिकायत थी कि चोरों और ठगों के इस समुदाय में पादरी भी कमीना है।

अपनी छोटी से कमाई से उसने एक स्कूल खोला ताकि गरीबों के बच्चे पढ़ सकें। जब एक उजड़े स्कूल के खस्ताहाल भवन को सही किया गया तो आर्चबिशप फिडरिख काउंट श्वार्जनबर्ग ने उसका खुद उदघाटन किया। इसे गांव वालों ने बहुत इज़्ज़त की नजर से देखा और फादर मोर से वे बहुत प्रभावित हुए। सराय में वह सम्मानित अतिथि के तौर बुलाए गए। वहां उन्होंने एक गिलास बियर पी। दूसरे गिलास के बाद उन्होंने अपना लिखा हुआ एक गीत गिटार पर गाया। एक चीज थी जिसका वह पालन नहीं कर पाए, वह थी शुचिता। एक बार उन्होंने अपने सहायक को इस बात के लिए बर्खास्त कर दिया था कि वह आध्यात्मिकता के साथ उनके जूते और कपड़ों का ख्याल नहीं रख पाया था।

वग्रयन मे चपेल

जोसफ मोर का देहांत 4 दिसंबर, 1848 को वार्गेन में हो गया। वह दुनिया में गरीब की तरह आए थे और उसी तरह रुखसत हो गए। उनके अंतिम संस्कार के लिए भी पर्याप्त धन नहीं था क्योंकि सब कुछ तो वह अपने आसपास के लोगों पर खर्च कर चुके थे। खासतौर से बच्चों पर जिन्हें पढ़ाई का कभी अवसर नहीं मिल पाता। वह कुछ हमारे लिए भी छोड़ गए। एक ऐसा क्रिसमस गीत जो जीसस क्राइस्ट के जन्म का जश्न मनाने के लिए और हर बच्चे के जन्म के लिए समर्पित है और जिसे हर कोई समझ सकता है। चूंकि यह गिटार के लिए लिखा गया था लिहाज़ा इसे वे लोग भी गा सकते हैं जो चर्च नहीं आते या आ नहीं पाते। कभी 1995 में जोसफ मोर की लेखनी में 1816 की एकमात्र पांडुलिपि मिली जिससे गीत के पीछे की कहानी को नई परिभाषा मिलती है। वही कहानी जो साल्ज़बर्ग में स्टिनगासे 9 से कई साल पहले शुरू हुई थी।

हनो शिल्फ ने कई वर्षों तक साइलेंट नाइट गीत की उत्पत्ति तथा जोसफ मोर की जीवनी पर शोधकार्य किया है तथा वह साइलेंट नाइट संग्रहालय के संस्थापक थे जहां उन्होंने जोसफ मोर के जन्मस्थान का जीर्णोद्धार कराया।

वह साइलेंट नाइट गीत की कहानी पर आधारित दो उपन्यास भी लिख चुके हैं।

इस गीत की उत्पत्ति की कहानी।